International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आपहुंदरी: स्वतंत्र-लेखन का स्त्री विमर्श

ज्योति शर्मा

सहायक प्राध्यापिका, यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर्स ट्रेनिग एंड रिसर्च चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली, पंजाब

Abstract

आत्मकथा लेखन का अर्थ ही है- सत्य की कसौटी पर खरा उतरना, जीवन में घटित तमाम घटनाओं को सत्य के तराजू पर तोलते हुए वर्णित करना और जब यह वर्णन कोई महिला बड़ी बेबाकी के साथ, सभी वर्जनाओं को तोड़ कर करती है तो एक क्रांति का उद्भव होता है। ऐसा उद्भव देखने को मिलता है जब बीसवीं सदी के अन्तिम दशक पर मौन तोड़ती स्त्रियाँ दुर्गम राहों से गुजरतें हुए पढ़ लिखकर साहित्यकार बनती है। इनमें से कुछ ऐसी साहसिक स्त्रियाँ भी हुई है जो अपने जीवन के संघर्ष, पीडा, अन्याय, शोषण के साथ-साथ स्त्री-अस्तित्व, स्त्री-अधिकार स्त्री-स्वतंत्रता को आत्मकथा-साहित्य के माध्यम से बयां कर एक नई जमीन तैयार कर रही हैं। हिन्दी साहित्य में अनेक आत्मकथाएँ साहित्यिक पटल पर उभर रही हैं, इनमें प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भण्डारी, सुषम बेदी इत्यादि महत्त्वपूर्ण है। उक्त सभी आत्मकथाएँ अपने समय और समाज की सच्चाई का आईना तो दिखाती हैं साथ ही साथ स्त्री-उत्पीड़न पर आवाज भी उठाती हैं। उसी कड़ी में रमणिका गुप्ता भी आती हैं। जिनकी आत्मकथा 'आपहुंदरी' के माध्यम से स्त्री विमर्श को एक नई जमीन देने और सवालों का सिलसिला जो सोचने को मजबूर करता है, को इस प्रपत्र के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है।

सूचक शब्द : आपहुंदरी, वर्चस्व, आस्तित्व, बलात्कार, स्त्री-उत्पीड़न

स्त्री आत्मकथा लेखिकाओं ने नारी को उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व दिया है-नारी मात्र एक देह कोमलांगी वस्तु नहीं, यह स्वतंत्र निर्णायक, साहसी और बुद्धि विवेक से सम्पन्न भी है परम्परागत बेडियों की जकड़न से अपने को मुक्त कराने में उसे बहुत समय लगा है। अपने स्वतंत्र अस्तित्व को गढ़ने, समाज में स्त्री वर्चस्व को बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य उसने अपने हाथों में लिया है। प्रभा खेतान, मन्नू भण्डारी, मैत्रेयी पुष्पा, रमणिका गुप्ता, सुषम बेदी की आत्मकथाएँ स्त्री विमर्श का एक नया अध्याय प्रस्तुत करती हैं। आत्मनिर्भर होती स्त्री ने जब से पुरुषवादी समाज द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखा को लांघने का साहसिक कदम उठाया सामाजिक विषमताओं पर प्रश्न पूछने का साहस किया है, उस दिन से स्त्री के साधारण प्रश्नों से विचलित होने वाले दम्भी पुरुष समाज का घिनौना रूप सामने आने लगा है। वर्तमान में शोषण, बलात्कार, स्त्री-उत्पीड़न, देह व्यापार की घटनाओं में भी उत्तरोतर वृद्धि इसी का परिणाम है।

आत्मकथा-साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के दबे ढके अत्यन्त गोपनीय सच को वाणी देती हैं। समाज में स्त्रियों के लिए जगह-जगह पर कटघरे रखे गए हैं, किन्तु यह आत्मकथा लेखिकाएँ सभी बंधनों को तोड़ते हुए स्त्री जीवन की चुनौतियों को

स्वीकार करती है। एक स्त्री को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक वर्जनाओं, बंधनों में जीना मरना होता है। उसका हंसना-रोना, खाना-पीना, सोना-उठना बैठना चलना-फिरना लिखना-पढ़ना, खेलना-कूदना यहाँ तक की कैसे कपडे पहनना है और कैसे जीना है? इन सब पर अनेक पाबंदियाँ लगाई जाती हैं। इसी संदर्भ में अपना मत प्रस्तुत करते हुए स्त्री विमर्श की महान लेखिका प्रभा खेतान लिखती हैं- स्त्री की जिन्दगी के बारे में पुरुष लेखन ज्यादा-से-ज्यादा अर्धसत्य का ही दावा कर सकता है। स्त्री के शोषण उत्पीड़न पर चर्चा की गई, आँसू बहाए गए, मगर समाज की इस भेदभाव वाली संरचना के विकल्प में बिल्कुल नहीं सोचा गया। व्यवस्था से मुक्ति की चाहना को अपने लेखन में जितनी शिद्दत से वह (स्त्री) महसूस करती है या जितनी गहराई से तन्मय होकर अपने उत्पीडन और शोषण को वह अभिव्यक्त कर पाती है उतना पुरुष लेखन द्वारा संभव नहीं। पितृसत्तात्मक दमन जितना करीब से स्त्री ने देखा और झेला है उतना अन्य किसी ने नहीं।

आत्मकथा लेखन का अर्थ ही है सत्य की कसौटी पर खरा उतरना, जीवन में घटित तमाम घटनाओं को सत्य के तराजू पर तोलते हुए वर्णित करना। इक्कीसवीं सदी की यह सभी आत्मकथा लेखिकाएँ सत्य की इसी रहस्यमयी मारक और विध्वंसक शक्ति का प्रयोग करती हैं। किसी भी स्त्री द्वारा अपने प्रेम प्रसंग, एबॉर्शन, लिव इन रिलेशनशिप, मेनोपॉस, गर्भपात, प्रेम से इतर संबंधों को इस तरह सरेआम उजागर करना कोई साधारण बात नहीं है। यह एक साहसिक कदम है। इस तरह अपने जीवन का नग्न चित्रण करना जहाँ साहसिक कदम है। वहीं यह स्त्री का दुस्साहसिक कार्य भी है। रमणिका गुप्ता उन्हीं महिला लेखिकाओं में से एक हैं, जिन्होंने सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ते हुए स्वतंत्र आत्म-लेखन को सृजा।

'आपहुंदरी' रमणिका गुप्ता के प्रेम प्रसंग की कहानी होने के साथ-साथ आत्म-स्वतंत्र-लेखन का अद्‌भुत दस्तावेज भी है। बचपन में दैहिक शोषण का शिकार होती रमणिका गुप्ता मासूमियत खो बैठती है। 11-12 वर्ष की आयु में निरन्तर दैहिक शोषण ने रमणिका गुप्ता के भीतर यौन की अतृप्त प्यास पैदा कर दी। रमणिका गुप्ता लिखती हैं कि "अपने को अतृप्त रखना, पूर्ण न होने देना, असन्तुष्ट रहना, बचपन में ही मैंने सीख लिया था और इसी अपूर्णता और अतृप्ति को मैं पूर्णता और तृप्ति के रूप में स्वीकारती थी। असन्तोष मुझे गति देता था। कुछ पाने की इच्छा मेरी इच्छा-शक्ति को ऊर्जा देती थी। तृप्ति मुझे गतिहीनता का प्रतीक लगती थी। तृप्ति मुझे मुर्दापन का अहसास कराती थी। एक ऐसा अहसास जहाँ सब खत्म हो जाता है और करने को कुछ शेष नहीं रह जाता। हासिल करना मेरा लक्ष्य जरुर था लेकिन हासिल करके सन्तुष्ट हो जाना, न मैंने जाना, न ही मैंने सीखा।"2

'आपहुंदरी' में रमणिका गुप्ता रिश्तों में छिपे दुराचार, भाई-बहन जैसे पावन रिश्तों को मुलाने की पुंसवादी मानसिकता को स्पष्ट करती हैं। अपने चचेरे भाई द्वारा दैहिक स्तर पर बालपन में घटी उनके कुँवारेपन में योनि के क्षत-विक्षत होने की घटना को अत्यन्त बेबाक ढंग से अभिव्यक्त करते हुए लिखती हैं कि "भाई-बहन के रिश्ते का एक अलग आदर्श था मेरे मन में, जिसे तोड़ा था उसकी इस हरकत ने। यह बड़ा सवाल था जो मुझे प्रायः कचोटता रहता था, इसी कचोट ने मेरे आदर्शों के पारदर्शी पदों की ओट को तार-तार कर दिया था। रिश्तों के पर्दे चाक-चाक हो गये थे। यौन वर्जनाएँ जैसे उपहास उड़ा रही थीं, वर्जना लगाने वालों या मानने वालों का या रिश्तों का। मेरे मन में बैठे रिश्तों की कसौटी में गहरी दरार पड़ गयी थी। उसी दिन शायद यौन के प्रति जिज्ञासा भी तीव्र हुई थी। वर्जनाएँ जो यौन संबंधों पर लगी थीं, ढहने लगी थीं या ढह गयी थीं। अंकुश ही मुचक गया था।"3

'आपहुंदरी' में स्त्री आत्म-स्वतंत्र-लेखन का फलक बहुत व्यापक है। इस आत्मकथा का एक प्रमुख आयाम 'स्त्री-मुक्ति से भी संबंधित है। मास्टर के शोषण से मुक्त होने के लिए झटपटाती रमणिका प्रेम-यात्रा पर निकल पड़ती है, जहाँ उनकी मुलाकात वेद प्रकाश गुप्ता से होती है। समाज, जात-पात की परवाह किए बिना प्रकाश से अन्तरजातीय विवाह करती है। प्रकाश ही वह राजकुमार था, जो जिन्न रूपक आर्य समाजी मास्टर से रमणिका को मुक्ति दिला सकता था। रमणिका गुप्ता लिखती है कि "मेरे भीतर कोई शहजादा-राजकुमार या नाइट बसता था, जो मेरे भीतर बैठी एक डरी-सी लड़की को मुक्ति दिलाने के लिए सदैव तत्पर रहता था। मेरे कानों में राजकुमार की आहट अनवरत गूंजती थी। पता नहीं क्यों एक अंतरंग साथी बनकर एक पुरुष मेरी मदद में आ जाता था, जबकि पुरुष से ही त्रस्त थी मैं।"4

रमणिका गुप्ता पुरुष की संस्कारबद्धता एवं संदेह करने की पुरुष प्रवृत्ति से त्रस्त आकर यौन वर्जनाओं, निषेधों के सभी प्रतिमान, नैतिकता के सभी मानदण्डों को तोड़ते हुए प्रेम की अतृप्त प्यास को, यौनाकांक्षा एवं सेक्स भावना को अत्यन्त बेखौफी के साथ प्रस्तुत करती है। इस संदर्भ में यह लिखती हैं कि "मैं जितना भी वफादार रहूँ, प्रकाश तो मुझ पर शक करेगा ही, फिर क्या जरुरत है। इस निष्फल, बेमतलब वफादारी की, जब वफादार होने पर भी शक की नज़रों से ही देखा जाना है। फिर शक को ही सच होने दो। क्या हर्ज है?"5 प्रकाश के साथ बनते-बिगड़ते रिश्तें, जीवन जीने की उन्मुक्त चाह रमणिका को संवेदना विहिन बना देती हैं और हर क्षण वह उन मौकों की खोज में रहती हैं, जिनके माध्यम से वह अपने स्वप्नों को पूरा कर सकें। अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति रमणिका को बार-बार दैहिक शोषण की गुमनाम गलियों में ला खड़ा करती है, जहाँ वे बार-बार गर्भवती होती हैं हर बार एबॉर्शन करवाती है। अपनी बेटी के जन्म की सच्चाई की स्वीकारोक्ति उनके आत्म-स्वतंत्र-लेखन का ही परिणाम है। बकौल रमणिका गुप्ता "मैं पति नाम के खूंटे से बंधी थी, पर उसे मैं एक रस्मी रिश्ता मानकर निभा रही थी। इसलिए अपने प्रेम के रिश्ते गोपनीय रखती थी, पर अगर प्रकाश को पता चल जाए तो मैं सच-सच कह भी देती थी। भक्ष्य-अभक्ष्य क्या है, यह सम्बन्धित व्यक्ति ही तय करता है। अपने यौन सुख के किस्से सुनाकर वह मुझे उत्तेजित करता था या मैं ही उसके सेक्स-सुख का अन्दाजा लेते-लेते स्वयं ही उस सुख के लिए आतुर हो उठती थी, यह मैं नहीं कह सकती।"6

'आपहुंदरी' रमणिका गुप्ता के भोगे हुए जीवन की खुली किताब हैं, जिसके अन्तर्गत उन्होंने अपने साथ घटित लेस्बियन संबंध को भी आत्म-स्वतंत्र-लेखन से प्रस्तुत किया हैं। युवा होती भाभी अपनी देह की भूख मिटाने के लिए रमणिका को कसकर अपनी बाँहों में भर लेती, लेस्बियन संबंध बनाती हैं। डरी सहमी रमणिका दादी के पास भागकर अपने को बचाने की कोशिश करती है इस घटना से रमणिका के मन में पुरुष के साथ-साथ औरत के साथ सहवास का बीज भी पड़ जाता है। रमणिका गुप्ता लिखती है कि 'पुरुष तो स्त्री को प्रायः इस दृष्टि से ही देखता है भाभी से लेस्बियन' रिश्ते की तो शुरुआत हुई, पर उस रिश्ते के प्रति घृणा और भय की प्रेतछाया भी मेरे मन में पलने लगी।

कई पुरुषों से 'फिजीकल रिलेशनशिप' रखने के बावजूद भी यौनाकांक्षा से पूर्ण संतुष्ट नहीं हो पाती। इस यात्रा में उनके जीवन में एक के बाद एक पुरुष आते रहते हैं। यह एक ऐसी पगडंडी बन जाती है, जिसका कोई अन्त नहीं होता। बकौल रमणिका गुप्ता "वे क्षण मुझे ज्यादा अच्छे और तर्क संगत लगते थे, जिन्हें मैं मुक्त होकर जिऊं और निमाऊँ कि कहीं में बेवफा

या विश्वासघाती न कहलाऊँ। मैं नहीं जानती, क्यों ऐसा हुआ, जब एक ही समय में मुझे एक से अधिक लोगों के साथ प्यार का अहसास होने लगा। ये मैं निश्चित तौर पर कह सकती हूँ कि जितने भी क्षण, पल, दिन या महीने मैंने जिसके साथ गुजारे, वे पूरी तरह उसी के साथ जिए और गुजारे। तब दूसरे या किसी और का ध्यान मुझे नहीं आया। जब कोई दूसरा मेरे नजदीक आता तो मेरा समय उसी के लिए हो जाता।"7

'आपहुंदरी' में रमणिका गुप्ता का आत्म-स्वतंत्र-लेखन रूप न सिर्फ अपने प्रेम प्रसंगों और यौन संबंधों का खुलासा करने में नज़र आता है अपितु पीरियड रुकने पर प्रेगनेंट होने पर एबॉशर्न कराने में भी प्रकट होता है। बच्चा न होने का ऑपरेशन मुक्त होकर प्रेम सुख प्राप्त करने के लिए करवाती है। रमणिका गुप्ता को इस ऑपरेशन से सारे झंझटों से मुक्ति मिल जाती हैं। सामाजिक एवं पारिवारिक लोक-लाज की रक्षा भी हो जाती हैं। स्वतंत्र सोच एवं दृढ़ निश्चय की धनी रमणिका गुप्त लिखती हैं कि "माँ, जिसका बनना कब गौरव बन जाता है और कब कलंक, यह स्त्री नहीं जानती। यह समाज के हाथ में है, पुरुष के हाथ में है। चूंकि माँ देवी है या कुलटा, इसकी मुहर पुरुष ही लगाता है, जो बाप कहलाता है। मैं माँ की सृजनशक्ति को बच्चा पैदा करने की क्षमता को गौरवमय मानती थी। किसने बीज डाला, यह मेरे लिए गौण था। मैने खेत ही बंजर रखने का फैसला लिया, फिर कोई विवाद नहीं होगा। फसल ही नहीं उगेगी तो मिल्कियत कैसी? जमीन है? धरती है, उस पर दावे करते रहे पुरुष उन दावों से क्या होगा। धरती तो धरती है। वह अपने अस्तित्व के कारण है किसी मालिक या पुरुष के कारण धरती, धरती नहीं बनती। औरत भी किसी पुरुष के कारण औरत नहीं होती।"8

आपहुंदरी में रमणिका गुप्ता का आत्म-स्वतंत्र-लेखन रूप लज्जा नामक दूसरी बेबस लड़की को मास्टर के चंगुल से मुक्त कराने में भी नजर आता है। डरी सहमी वह लड़की मास्टर की उन गलत हरकतों का विरोध नहीं कर पाती। रमणिका गुप्ता को जब इस घटना का पता लगता है, तो वह मास्टर का पर्दाफाश करते हुए अपने पिताजी, बीजी से कहती हैं कि "आप तो मुझ पर विश्वास नहीं करते थे, पर आपकी आँख तले यह हमारा शोषण करता रहा और अब लज्जा का कर रहा है। मुझे भी ब्लैकमेल कर रहा है। अब या तो यह मास्टर घर में रहेगा या मैं रहूंगी।"9 'आपहुंदरी में रमणिका गुप्ता व प्रकाश की शादी में गवाह की भूमिका निभाने वाले मिलट्री का रिटायर्ड अफसर को उसकी माँग पर यौन सुख प्रदान करने की स्वीकारोक्ति आत्म-स्वतंत्र-लेखन है। रमणिका गुप्ता कहती हैं "पता नहीं मुझे उस वक्त क्या हो गया था? सेक्स को पुरुष का अधिकार और पहल मानने वाली मैं, उस दिन स्वयं पुरुष बन बैठी और मैंने स्वयं प्रयास करना शुरु कर दिया।"10

निष्कर्ष

आपहुंदरी आत्मकथा में सेक्स का खुला एवं व्यापक चित्रण रमणिका गुप्ता के आत्म-स्वतंत्र-लेखन का दस्तावेज है। इक्कीसवीं सदी की यह लेखिका अपने खिलाफ खड़ी सामाजिक परम्पराओं, रूढ़ियों और तथाकथित संस्कारों की बाढ़ से उबरने के लिए प्रयासरत है। आत्मकथा लेखिका पर लेखन के क्षेत्र में भी बहुत हमले हुए, बहुत आरोप लगे, लांछन उछाले गये। स्त्री समाज की मुक्ति की छटपटाहट ही उसे अपने प्रगतिगामी मार्ग बनाने के लिए प्रेरित करती रही है। आत्मकथा को पढ़ते हुए आगे की घटनाओं को जानने के लिए पाठक के भीतर बढ़ता कौतूहल ही आत्मकथा-साहित्य की प्रयोजनशीलता को प्रमाणित करता है। और आत्म-स्वतंत्र-लेखन यानि एक खुली किताब बनना, बिना इस बात की प्रवाह किये की समाज

क्या सोचेगा; अपने आप में एक साहसिक कार्य तो है ही, लेकिन एक प्रश्न चिन्ह भी छोड़ता है कि समाज में रहने वाले कुछ अमानुष, तत्व किसी की व्यक्तिगत जिंदगी को क्या से क्या बना सकते हैं, यह अधिकार उन्हें किसने दिया?

सन्दर्भ:

1. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, पृ.-120
2. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, अपराध बोध का बीज, पृ.-84
3. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, सच बोलना क्यों जरुरी, पृ.-16
4. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, वफादारी की कसम टूटी, पृ.-261
5. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, मद्रास, पृ.-336
6. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, देह की भूख, पृ.-125
7. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, आंखों से झलकता प्यार, पृ.-272
8. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, मद्रास, पृ.-339
9. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, जब रिश्तों की गरिमा टूटी, पृ.-300
10. रमणिका गुप्ता, आपहुंदरी, यू आर माई लिटिल एंजेल, पृ.-220